2 वर्ण-विचार : उच्चारण और वर्तनी

(Orthography: Pronunciation and spellings)

वर्ण-विचार

बच्चो, आप जानते हैं कि भाषा को लिखने के ढंग को लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। प्रत्येक लिपि के अपने कुछ चिह्न होते हैं। इन चिह्नों को ही वर्ण कहते हैं; जैसे– हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है और इनके वर्ण हैं– अ, आ, इ, क्, ख्, ग् आदि। वर्ण भाषा की सबसे छोटी इकाई होते हैं। इनके टुकड़े नहीं किए जा सकते। अतः हम कह सकते हैं कि

भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके टुकड़े न किए जा सके, **वर्ण** कहलाती है।

वर्णमाला

वर्णों के व्यवस्थित अथवा क्रमबद्ध समूह को **वर्णमाला** कहते हैं।

वर्णों के भेद :

हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं–

(1) स्वर (2) व्यंजन।

1. स्वर– जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य वर्ण की सहायता के होता है, वे स्वर कहलाते हैं।

इनकी संख्या 11 है–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

उच्चारण में लगने वाले समय के अनुसार स्वरों को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

(1) ह्रस्व स्वर (2) दीर्घ स्वर (3) प्लुत स्वर

(1) ह्रस्व स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है– अ, इ, उ, ऋ।

(2) दीर्घ स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या सात है– आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(3) प्लुत स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इसका चिह्न ३ है; जैसे–ओ३म।

Scanned with CamScanner

स्वरों की मात्राएँ

स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न मात्रा कहलाते हैं।

स्वरों का प्रयोग उनके वास्तविक रूप में भी होता है और उनकी मात्राओं के रूप में भी।

स्वरों का मूल रूप में प्रयोग– स्वर अपने मूल रूप में अर्थात अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ के रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे– आना, आइए, ऐनक आदि।

स्वरों का मात्रा के रूप में प्रयोग–

स्वर–	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा–		ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

मात्राओं का व्यंजनों के साथ प्रयोग–

स्वर	मात्रा	मात्रायुक्त शब्द
आ	ा	काम, गाना, बादल
इ	ि	किसान, गिरगिट, चिड़िया
ई	ी	कील, दीवार, दीपक
उ	ु	कुरता, रुकना, बुलबुल
ऊ	ू	कूलर, रूप, फूल
ऋ	ृ	कृषक, वृक्ष, मृग
ए	े	केला, मेला, रेल
ऐ	ै	कैलाश, तैराक, मैना
ओ	ो	कोयल, रोटी, लोटा
औ	ौ	कौन, गौरैया, मौसी

विशेष

- 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती।
- र के साथ उ / ऊ स्वरों की मात्रा का प्रयोग इस प्रकार होता है– र + ु = रु → रुचि; र + ू = रू → रूप।
- 'ऋ' का उच्चारण 'रि' की तरह होता है। इसका प्रयोग केवल संस्कृत से आए शब्दों में ही होता है।

अयोगवाह

अनुस्वार, तथा विसर्ग अयोगवाह कहलाते हैं। ये न तो स्वर होते हैं औन न ही व्यंजन।

अनुस्वार– अनुस्वार 'अं' का उच्चारण नाक से होता है। इसका चिह्न ं है; यह भी मात्रा रूप में प्रयुक्त होता है जैसे– अंगूर, संतरा, चंचल, पतंग, हंस आदि।

Scanned with CamScanner

विसर्ग– विसर्ग 'अः' का उच्चारण 'ह' की तरह होता है। इसका चिह्न ':' है। यह व्यंजनों के बाद लगता है; जैसे– अतः, प्रातः काल, नमः, पूर्णतः आदि।

अनुनासिक– अनुस्वार की तरह अनुनासिक 'अँ' भी नासिक्य ध्वनि है परंतु इसके उच्चारण में हवा नाक तथा मुँह दोनों से दबाव के साथ बाहर निकलती है। इसका चिह्न ँ है; जैसे– आँख, दाँत, चाँद, हँसना, गाँव आदि। शिरोरेखा के ऊपर लगनेवाली मात्रा के साथ यह अनुस्वार रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे– मैं-मैं।

आगत ध्वनि– अन्य भाषाओं से हिंदी भाषा में आई ध्वनियों को आगत ध्वनियाँ कहते हैं; जैसे– ऑ, ज़, फ़। इनके प्रयोग से बननेवाले शब्द हैं– डॉक्टर, ज़रा, फ़न आदि।

र के रूप– र व्यंजन को मात्रा के रूप में भी प्रयोग किया जाता है।

रेफ़ (र्‍)– 'र' व्यंजन को स्वर रहित दिखाने के लिए इसका प्रयोग रेफ़ (र्‍) के रूप में किया जाता है; जैसे–धर्म, गर्व आदि।

पदेन (्र / ्र)

(्र)– जिन व्यंजनों में पाई होती है, उन्हें स्वर रहित दिखाने के लिए 'र' का प्रयोग उनके पैरों में होता है; जैसे– क्रम, व्रत आदि।

(्र)– जिन व्यंजनों में पाई नहीं होती और नीचे से गोल होते हैं, उन्हें रहित दिखाने के लिए 'र' का प्रयोग (्र) के रूप में होता है; जैसे– ट्रक, ड्रामा आदि।

2. **व्यंजन–** जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। इनके उच्चारण में हवा मुख के किसी-न-किसी भाग से टकराकर बाहर निकलती है। मूल रूप से व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	

व्यंजनों के भेद–

उच्चारण के आधार पर व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं–

(1) स्पर्श व्यंजन; (2) अंतस्थ व्यंजन; (3) ऊष्म व्यंजन।

(1) स्पर्श व्यंजन– जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के किसी-न-किसी भाग को स्पर्श करती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। 'क' से लेकर 'म' तक सभी स्पर्श व्यंजन हैं–

Scanned with CamScanner

कवर्ग	क ख ग घ ङ
चवर्ग	च छ ज झ ञ
टवर्ग	ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़
तवर्ग	त थ द ध न
पवर्ग	प फ ब भ म

(2) अंतस्थ व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण में जिह्वा मुख के किसी भी भाग को पूर्ण रूप से स्पर्श नहीं करती, वे अंतस्थ व्यंजन कहलाते हैं। य, र, ल तथा व अंतस्थ व्यंजन हैं।

(3) ऊष्म व्यंजन– जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा के रगड़ खाने के कारण मुख में गर्मी उत्पन्न होती है, वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। श, ष, स तथा ह ऊष्म व्यंजन हैं।

अतिरिक्त व्यंजन– ड़ तथा ढ़ अतिरिक्त व्यंजन हैं। इनका प्रयोग शब्द के बीच में या अंत में होता है। प्रारंभ में नहीं।

संयुक्त व्यंजन– संयुक्त व्यंजन दो व्यंजनों के मेल से बनते हैं। इनकी संख्या चार है–

क् + ष = क्ष (क्षमा, क्षत्रिय)

ज् + ञ = ज्ञ (ज्ञान, विज्ञान)

त् + र = त्र (त्रिशूल, पत्र)

श् + र = श्र (श्रमिक, श्रीमान)

द्वित्व व्यंजन– जब समान व्यंजन का स्वर रहित तथा स्वर सहित मेल होता है, तो वह द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे– क्क, ग्ग, च्च, ज्ज, त्त, स्स आदि।

संयुक्ताक्षर– जब एक स्वर रहित व्यंजन का भिन्न स्वर सहित व्यंजन से मेल हो, तो वह संयुक्ताक्षर कहलाता है; जैसे– क्ख, च्छ, त्स, क्य, स्त, श्य आदि।

वर्णों का उच्चारण-स्थान

मुख के जिस भाग की सहायता से जो वर्ण बोला जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है। उच्चारण-स्थान के आधार पर व्यंजनों को 10 भागों में बाँटा गया है–

1. **कंठ्य–** जिन व्यंजनों का उच्चारण कंठ अर्थात गले से होता है, वे कंठ्य कहलाते हैं; जैसे– अ, आ, अः, क, ख, ग, घ, ङ कंठ्य व्यंजन हैं।

2. **तालव्य–** जिन व्यंजनों का उच्चारण तालु से होता है; उन्हें तालव्य कहते हैं; जैसे– इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श तालव्य व्यंजन हैं।

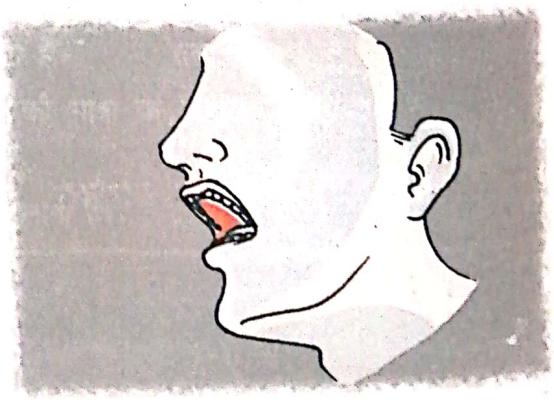

3. **मूर्धन्य–** जिन व्यंजनों का उच्चारण मूर्धा की सहायता से किया जाता है, वे मूर्धन्य कहलाते हैं; जैसे– ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, र, ष मूर्धन्य व्यंजन हैं।

4. **दंत्य–** जिन व्यंजनों के उच्चारण में दाँतों की सहायता ली जाती है, वे दंत्य कहलाते हैं; जैसे– त, थ, द, ध, न, ल, स दंत्य व्यंजन हैं।

Scanned with CamScanner

5. ओष्ठ्य– जिन व्यंजनों का उच्चारण ओष्ठ अथवा होंठ की सहायता से होता है, वे ओष्ठय कहलाते हैं; जैसे– उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म ओष्ठ्य कहलाते हैं।

6. दंतौष्ठ्य– जिन व्यंजनों के उच्चारण में दाँत तथा निचले ओंठ दोनों की सहायता लेनी पड़ती है, वे दंतोष्ठ्य कहलाते हैं। व, फ दंतौष्ठ्य व्यंजन हैं।

7. नासिक्य– जिन व्यंजनों का उच्चारण नाक की सहायता से होता है, वे नासिक्य कहलाते हैं। अं, ङ, ञ, ण, न, म नासिक्य व्यंजन हैं।

8. कंठतालव्य– जिन व्यंजनों के उच्चारण में कंठ तथा तालु दोनों की सहायता लेनी पड़ती है, वे कंठतालव्य कहलाते हैं। ए तथा ऐ कंठतालव्य व्यंजन हैं।

9. कंठौष्ठ– जिन व्यंजनों के उच्चारण में कंठ / गले और ओंठ दोनों की सहायता लेनी पड़ती है, वे कंठौष्ठ व्यंजन कहलाते हैं। ओ तथा औ कंठौष्ठ व्यंजन हैं।

10. स्वर-यंत्रीय– ह का उच्चारण स्वर-यंत्र की सहायता से किया जाता है।

स्वर-यंत्र में कंपन के आधार पर वर्णों के भेद

बोलते समय या उच्चारण करते समय स्वर-यंत्र में कंपन होता है। इसके आधार पर वर्णों के दो भेद हैं–

(1) सघोष वर्ण; (2) अघोष वर्ण।

(1) सघोष वर्ण– जिन वर्णों के उच्चारण करते समय हवा स्वर-यंत्री से टकराते समय कंपन उत्पन्न करती है, वे सघोष वर्ण कहलाते हैं।

सघोष स्वर– अ, आ, ऑ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

सघोष व्यंजन– ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, द, ध, न, ब, भ, म, य, र, ल, व, ह।

(2) अघोष वर्ण– जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर-यंत्री में कंपन नहीं होता, उन्हें अघोष वर्ण कहते हैं। क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स अघोष व्यंजन हैं।

वायु प्रक्षेपण के आधार पर व्यंजनों के भेद

व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्रयुक्त साँस या वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं– अल्पप्राण तथा महाप्राण।

1. अल्पप्राण– जिन व्यंजनों के उच्चारण में कम समय तथा कम वायु की आवश्यकता होती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन तथा अंतस्थ व्यंजन अल्पप्राण व्यंजन होते हैं।

क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल तथा व अल्पप्राण व्यंजन हैं।

2. महाप्राण– जिन व्यंजनों के उच्चारण में अधिक समय तथा वायु की आवश्यकता होती है, वे महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन महाप्राण व्यंजन होते हैं–

ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, स तथा ह महाप्राण व्यंजन हैं।

वर्ण-विच्छेद

शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है; जैसे– आम = आ + म् + अ, कमल = क् + अ + म् + अ + ल् + अ आदि।

Scanned with CamScanner

(नोट– वर्ण-विच्छेद करते समय व्यंजनों को स्वर रहित दिखाने के लिए उनके नीचे हलंत लगाया जाता है।)

उदाहरण–

अजगर	अ + ज् + अ + ग् + अ + र् + अ
मिठाई	म् + इ + ठ् + आ + ई
तितली	त् + इ + त् + अ + ल् + ई
त्योहार	त् + य् + ओ + ह् + आ + र् + अ
स्वतंत्रता	स् + व् + अ + त् + अ + न् + त् + र् + अ + त् + आ
पुस्तक	प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ
प्रसन्न	प् + र् + अ + स् + अ + न् + न् + अ
प्रातःकाल	प् + र् + आ + त् + अः + क् + आ + ल् + अ

आओ दोहरा लें

- भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिसके टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण कहलाती हैं।
- वर्णों का व्यवस्थित अथवा क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है।
- वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं– स्वर तथा व्यंजन।
- जिन वर्णों का उच्चारण किसी अन्य वर्ण की सहायता के बिना होता है, वे स्वर कहलाते हैं।
- स्वर तीन प्रकार के होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न मात्रा कहलाते हैं।
- अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग अयोगवाह कहलाते हैं।
- जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
- व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं– स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन।
- मुख के जिस भाग की सहायता से जो वर्ण बोला जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है।
- स्वर यंत्री में कंपन के आधार पर वर्ण दो प्रकार के होते हैं– अघोष तथा सघोष।
- व्यंजनों का उच्चारण करते समय प्रयुक्त साँस या वायु की मात्रा के आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं– अल्पप्राण तथा महाप्राण।
- शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

Scanned with CamScanner

स्वर और व्यंजन के मिलने से वर्णमाला बन जाती है,
यही वर्णमाला बच्चो हमको भाषा सिखलाती है।

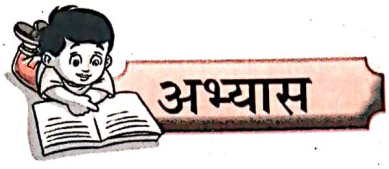

अभ्यास

1. सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए–

(क) वर्णों का व्यवस्थित समूह क्या कहलाता है?

☐ स्वर ☐ व्यंजन ☐ वर्णमाला ☐ अयोगवाह

(ख) अनुस्वार, अनुनासिक तथा विसर्ग क्या हैं?

☐ स्वर ☐ व्यंजन ☐ ऊष्म व्यंजन ☐ अयोगवाह

(ग) किन व्यंजनों के उच्चारण के समय मुख में ऊष्मा उत्पन्न होती है?

☐ स्पर्श ☐ ऊष्म ☐ संयुक्त ☐ अंतस्थ

(घ) जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा स्वर-यंत्री से बिना टकराए बाहर आए, वे क्या कहलाते हैं?

☐ अघोष ☐ अंतस्थ ☐ अल्पप्राण ☐ सघोष

(ङ) जिन व्यंजनों के उच्चारण में अधिक वायु तथा अधिक समय लगे, वे क्या कहलाते हैं?

☐ ऊष्म व्यंजन ☐ अंतस्थ व्यंजन ☐ अल्पप्राण व्यंजन ☐ महाप्राण व्यंजन

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) वर्ण तथा वर्णमाला किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(ख) स्वर तथा इसके भेदों की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

Scanned with CamScanner

.....

(ग) अयोगवाह कितने प्रकार के होते हैं? परिभाषा तथा उदाहरण लिखिए।

.....

.....

.....

(घ) व्यंजन के भेद परिभाषा सहित लिखिए।

.....

.....

.....

(ङ) स्वर-यंत्री में कंपन के आधार पर व्यंजन के भेद परिभाषा सहित लिखिए।

.....

.....

.....

3. सभी स्वरों की मात्राओं का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द लिखिए–

.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

Scanned with CamScanner

4. अयोगवाह और अनुनासिक के चिह्नों का प्रयोग करते हुए तीन-तीन शब्द लिखिए–

....

....

....

5. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए–

संबंध .....

स्वर्गिक .....

मित्रता .....

अभिलाषा .....

क्षत्रिय .....

परिश्रम .....

हार्दिक .....

अद्भुत .....

Scanned with CamScanner

2

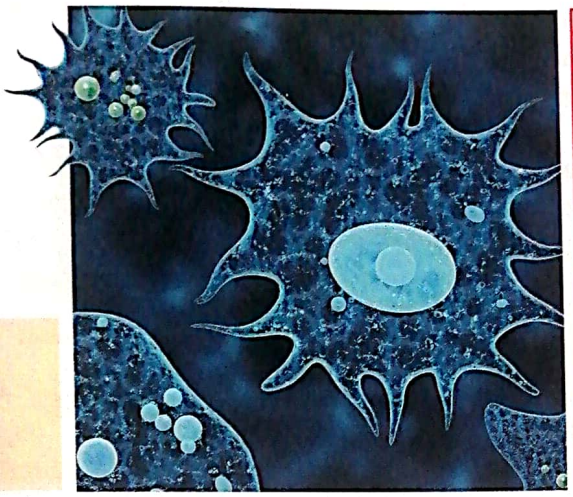

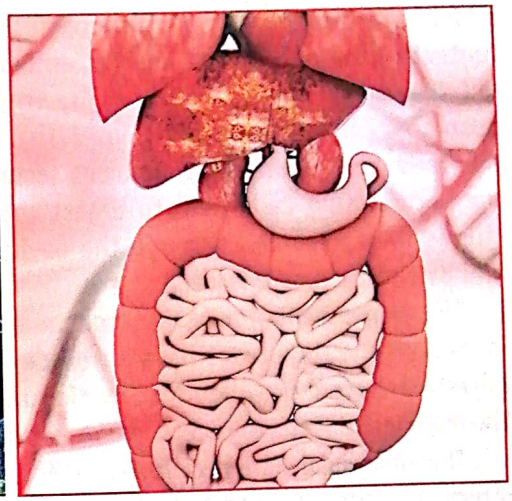

SCAN PAGE*

Nutrition in Animals

All animals including humans need certain nutrients to stay alive and grow. These nutrients are obtained from food. The food you eat (feeding) is not in a form that can instantly provide you with nutrients. First, it has to be broken down into small particles. These particles must then be changed into simple, soluble forms, which the body cells can absorb. Only then can food provide nutrients. The various processes involved in nutrition, in animals that take in solid food, are as follows.

- **Ingestion** is the taking in of food. It involves taking in the food through the mouth and eating it.
- **Digestion** is the breakdown of food into a simple, soluble form with the help of digestive juices made in the body.
- **Absorption** is the process by which the food in the soluble form passes into the body fluids such as blood.
- **Assimilation** is the process by which absorbed nutrients are utilized by the body.
- **Egestion** is the process of elimination of undigested solid parts of the food.

NUTRITION IN *AMOEBA*, *HYDRA* AND FROG

The unicellular *Amoeba* engulfs tiny particles of food by throwing its false feet, known as **pseudopodia** around it. The pseudopodia join together to form a small cavity known as a **food vacuole**. The food inside the vacuole is digested by digestive juices (Fig. 2.1a). It is absorbed

IN THIS CHAPTER

NUTRITION IN *AMOEBA*, *HYDRA* AND FROG ◆ THE HUMAN DIGESTIVE SYSTEM ◆ RUMINANTS

*For detailed instructions, see inside front cover.

Scanned with CamScanner